

यत्कन्दलं तं वसना न धलं कलिम्भ इह प्रसन्नं नृणां विद्वद्भिः
 न त्वत्कन्दलं त्वान्नकादुःखं ॥ जायते मे कन्दलं त्वद्विद्वद्भिः ॥
 नाम मत्तियुक्तं न विद्वद्भिः ॥ रुतं त्वत्कन्दलं त्वद्विद्वद्भिः ॥
 अकान्तं मूषदं कनादि ॥ यत्नं अद्य यावत्कन्दलं त्वद्विद्वद्भिः ॥
 न त्वत्कन्दलं त्वान्नकादुःखं ॥ जायते मे कन्दलं त्वद्विद्वद्भिः ॥
 त्वत्कन्दलं त्वान्नकादुःखं ॥ जायते मे कन्दलं त्वद्विद्वद्भिः ॥

2696

यैत्राहिनिवर्षयः पूर्वो रिमवायः द्वादसांगुलवधुना कृ
 त्वा दवाय अधिदवत्यष्टत्राय पराधि वना ४ मयः हि वंध्यः
 संविनादव गुरि कृपू द्वादसा अत्य कलानसदि
 माजर्घयनि कृत्वा हा ॥ संघ पूजा ॥ किमीन उमि ॥
 यमं का सज कात्यन समय रु ४ ला क ना ध जगदिय
 रु रा रु लः क लि ग द स जा न विष्णु वा स फ मि रु ४ व

विदलं कृ पि जानि नम म्मु ने ॥ ऊ ऊ मान स ग थ ग न आ दि ल्य ग द व
 न पी दा सा नि र्थ आ य आ ला ग का म ना र्थ आ दि ल्या र्च न वि ल्य स र्व वि धि य
 नि पू र्ण म्मु ॥ आ दि ल्य द व ना सृ पि ना व ल द्वा र व नु ऊ ऊ मान नि चा गी य
 दा र्श क म्मु ॥ ॥ ॐ नि आ दि ल्य ग द ४ ॥ कि क म ४ ॥ १ ॥ १४४ म सा
 नि धि ॥ ग्ध म या गु य रु म स व व लू नी य ल ल रु ल धा नु स र्व ॥ ध न स र्व
 रु न य क ॥ ल व ना ॥ ड स मा य ड मा य आ य पु र्वा धि द व ना य ॐ न्द माल

नमः नमः येषां ध्यानं ॥ ॐ ह्ययं गच्छती वलधना दध्म ह्यन विरुषन ग
 दापालि द्विवा ह्य ककुवा वन दा धालि ॥ स्व माय ध्यान पृष्ठा नमः ॥ क
 नां जलि ॥ ॐ श्रीं सः स्व माय नमः ॥ धय कपू ल सां ना न धाम लु न धि ल वि
 ह्य ॥ श्रीं सः रुजका वरु नाय स्वान यल स्वां ॥ जाय मं रु ॥ ॐ श्रीं सः स्वा
 गने वद्य धा ला म न लाय दाम चि कै रु ल च सि म धि इ इ म धि रु गु धि जा
 अ ध म्मा अ काल म स्य द रु कि ॥ अद्य शा क ॥ सिल क ॥ ॐ किल स म धा ला व

यत्र माष क रु व रु द ध्मां जा याय क नि कान अ याय अ व य ग म याय
 ल्य न व ल्य य व स म जा याय अ व च दाय द धि ना रि म र वा या य सा मा
 धि द व ना ड मा य य र्थ धि द वे ना अ हा ग म म धि र्म य नि रु द ल अ
 स्य न रु ल ग न स हि ना य ॥ र्मा अ ध य नि रु स्वा ला ॥ सं ष पू ज पा कि न नः
 रु नि ॥ ॐ हि म सं ष म ला वा रु क धा य धा नि पि या स मा क ला हि नी रु ला स
 दा मा नि य य रु रु ॥ सा म क रु व रु द ध्मां क रु को र व म अ नि अ वि यः

=

निर

लागां संहत वेग जागिन मसु गराड जमान स्यादि ॥ ५ ॥ पजा लावना
गुगु लिसेड थं इल ॥ ००० निस्वमगु रुध ॥ कि ॥ २ ॥ अंगल या पुका
थसा लक्ष पलि धातु पलि स्नान रु खोनय लावना सिल कम रु ॥ ३ ॥ अंग
वायस कंदाय जगिय हाधि देव माय ००० मी संपूर्ण नम ॥ ४ ॥ जालि ॥ ५ ॥ को
को स अंग नाय नम ॥ ६ ॥ धय घुगु न पक्ष मय न सान याय के म लु थिले चि
न श्री व लु जड का नाय स्नान अक्ष स्नान जाय ड को को ॥ ८ ॥ सखा हा ॥ न

वद्य समय धाला मन य काचि कं रुल न सिव निमधि रु रु इ इ जा जाय
अध मा अकाल मख द ज ना कि ॥ अध या गा ॥ सिल कम रु ॥ ३ ॥ मध ५ ॥
लाह वाय माय क स इ सम्यां जगाय य द्वा पाध न रु गाय ला ड वै ल ज गव
जाय अ ज्ञा व द व माय सकंदाय हाधि देव ना रु गी य विर पा रु मा धि र्म
य निरु न स अ रु न ग न स दि नाय ज ज मान स ००० मी अर्घ्य निरु स्वा
ला ॥ स व प जा ॥ कि न न ॥ ना रु ध ल निरु रु स र न व ध जिव सै य रु ॥ ४ ॥ कि

[illegible]

वृद्धाय नमः॥ धूपं सिद्धाय ४ पं वासु न स्नानं चिरं कूं कूं म् ज्जं का
वसुं ज्जं स्रुद्धां स्नानं॥ स्नानं जपं मन्त्रं॥ उं वूं वूं स्रुद्धां॥ ने वयं
संमयं धामनां तं वूं का विरुं रुं रुं का लां जं वि नू वि मधि रुं गु ति
धे वि जां नाय जां प॥ अ धर्मां जं का न मूर्खं रुं रुं ना कि॥ अर्धं मन्त्रं
॥ उं मगं च ४ वरुं वा यं रुं गु न रुं रुं द्वा दं जां वा यं न रुं न रुं जा यं अ न्ति यः
अं जा यं वे लं जां वा यं पी न व रुं रुं यं नू ना रुं रुं यं ०० ॥ न उं रुं वा रुं रुं रुं वा यं वृ

धृजिदवगायविष्णवे त्रधविषिः विष्णुदवगा र्णु उउपकु उ (१) अर्णुः
नवगनसहिगायकु ऊमाया अर्णुपनिष्ठस्यारु ॥ संखमजा किनने गा ॥ ३
वाहिनीगर्हसंरुग कर्हि कासेदलपहः समयवमहागे ऊवधसागिष्य
यकुनु ॥ धनिष्ठा द्वादसि ऊसमर्धद ॥ असमरुवे ना नायन द्विदवत्याव
धवेसा नमस्तु ॥ ऊजमानद सनिमित्तिकि पायथ ॥ ॐ निवधत्रासाति ॥
॥ वरुस्यगिया नकु ॥ धिगवसु वरुने वागुन ॥ खानकु रोगसं

रावना ॥ पीनमासां वनधना नव व ॥ समपहः ॥ वधा रावगुनगीया
ताऊसुग कमलु सुवदस्यनिष्ठा नपषांनम ॥ ऊगाऊरसि ॥ ३ ॥ ह्रीं ह्रीं स ॥
वरुस्यगियनम ॥ धप धत् पक्षम नसना नविन गव नवन ऊऊका
जासु खान अरुखान खान आपमस्तु ॥ ३ ॥ ह्रीं ह्रीं सः स्वाहा ॥ नवयस
मय धा ना मगसाधन रु सु ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सः स्वाहा ॥ नवयस

क धर्मो का नमः दक्षिण किं अथ मनु ॥ ॐ सिंधु दक्षिण वायु आग्ने
गुरु न का दक्षिण जाग्राम उरु न ह्यगुनि न क्रियाय अगस्त्य न गण
य वा क्र न जाग्राम पी न व ह्यय प मा कि नि उरु वा हि मूखाय वरु
ह्यमि अ धि द व नाय वृक्ष लय ह्य धि द व नाय कु म द ग्नी अ धि द वः
व नाय वरु ह्यमि द व ना ए क प चंद द क्ष अ ह्य न ग ल स ही नाय ऊरु
मान ॥ ॐ मां अर्घ्यं पुति च स्वाहा ॥ संघ द क्षा ॥ कि न न यो ग ॥ ॐ सी व

नी क सी का का ले ॥ स रोगाय ॥ य द विरु ॥ द व र्म गी म ह न जी गु न ॥
नि पु य च कु ॥ हि न्ध स म ह्म न् ह्यगु नि म क्र स र वं ॥ गु न ॥ य वृक्ष द व लेः
न म कु न ॥ ऊ र मा न स र्वा दि ॥ ॥ ॐ नि व ह्म स ति सी ति ॥
॥ ॐ कृ या क य गु स र न त्व मा नि धा तु अ ह ॥ सान क र्ण न स र व ना ॥ ॐ द व
द स गु व नि न क्र ति न ॥ य मो व रु रू का द लि ना व न दा का या सा क्र स प क
गु न ॥ गु क्रा य ध्वा न प र्वा न म ॥ क र्मां क ति ॥ ॐ दौं दौं स ॥ गु क्रा य न म ॥ ध

पुष्पगुह्य ॥ पञ्चमृतसाल ॥ चैत शीघ्रं पुष्पं पुष्पं कावसु ॥ ३ ॥ स्नानं
दावलिस्त्री ॥ नैवद्य समयं वा नाभामविकर्मन रुसुधा सुदिनिमधिः
रुगुधनजा ॥ कापमनु ॥ ३ ॥ डां डां सु ॥ स्वाहा ॥ अथ मां पुष्पावम द्रुनाकि
अधमिनु ॥ ३ ॥ रागवन्द ॥ रावाय वैशु मुद्रन मां जागाय पुष्पन क्रयाः
य रागैव गवाय वाक्कन जागाय मुद्रव श्रयव मुद्रसां कृतय पूर्वपुन्याः
रिमृत्वाय मुद्रा अधिदवगासु काय पर्याधिदवत्वा जाय वेसिन विधि मुद्र

दवगा निष्ठय कुडस्य अगन नवगन सहिताय ऊरुमान ल्यादि ॥ अर्ध
पनिष्ठु स्वाहा ॥ संवय जा ॥ किमन भागव ॥ ३ ॥ कासंद दूम कासं मुद्रव र्द्विह
धितं ॥ आनिददा कु वा निन देन व आसः ॥ रागव ॥ ॥ पुष्पा रागव न द ॥ नव
मां रागव र्द्विह मुद्र संकाधिदव र्द्विह जातिन म सुभ ॥ ऊरुमान निमिति
ल्यादि ॥ ॥ मुद्रा सा नि य जा ॥ ॥ अनिव च य मास क य गुहा
नवनीव धा तु न स्नान क्खे न र्द्विह व ना ॥ ३ ॥ ॥ नवीन समग्र नि ॥ नवीन व

द्वयुधवाहनवानवानासुतधवाकर्त्तुनाकोसुतसुदासुनीधवायध्यानय
धनम॥कर्मजलिताउंयांपीस४मनिधवायनमशाधूपगंधनस॥यंवागमनस
नाथ॥वनकमुत्त॥ऊऊकावस्तुकाउ॥स्नानजिह्वास्त्री॥नेवयसमयधवाक
मुविचिकैमनरुवमिसिहाममधिस्तुमासका॥उंयांपीस४स्वाहा॥कध
माअकनमस्तुदकलाकि॥अर्धमस्तु॥उं॥धवाकदस्तुवायमायमुक्तुअ
हर्माकावायनाहिनकृपायकायपगववायसूदकावायनीवह्यदिद्यकन
यप्रमिधप्रदकिनालिमस्ताय॥मनीधवाधिवदवाय॥कमायप्रत्यधिवदवा

यप्रकापतिअसि४मनिवचदवगागयनिकुडसुअस्तुनगनसहिनायह
कमास्वादि॥अर्धपतिकुस्वाहा॥संयप्रका॥किननगुति॥उंनीवात्येनद
धमास्तिनांजनान्हापिवास्तिनधवागुरु४य॥सदाधमनिययकुड॥भीरि
भीवायमी॥जानं॥धवास्तुकधवास्तुवगः॥कमाधिलोवीद॥भवसूदजानिन
मनुमे॥ऊऊमानस्यादि॥॥अर्धतिस्तिनधवाप्रकाविधि॥
नाह्याहाकस्तान्स्वमेवत्वाजानधवास्तु॥स्नानकुहोतसंस्वावभा
उंकवाववदनधावत्तवर्मधवकस्तंतीवनीवमहासुनस्तुवाहवध



समुद्रस्नानपवनकमुनेरुर्जकावधुपधरलंगस्नानउद्व
स्नाननेवद्यसमयधनामिसिचिकंलगुरुलेमसिकवउसिमधिहगु
सकगांनापक्रायेंनागु॥आप॥उंडांडीसिखाहा॥अधर्माअकालेमवेदक
नाकि॥अयमनुवध्वीयवृमाहवापआधनकसुअमावास्यांजावायअध्व
वानकृयायक्रमनिगवयायसुदजागुयभूमवक्षयस्वजांहेगयकायवप
त्रिमारिमूवायककुवेधिवदवायविगुकायेसंधिदवमायवुक्त
नवक्तमधि॥कचदवमागयधिकुदमअर्कंननेगनसहेताय॥कक

सनलोदि॥अर्घ्यपनि,कुस्वाहा॥संषयका॥किननेगु॥उंमंरुवने
नोकोनाचकयमिलोपिवाककुवेवकनगांलासदाभानिययकुठु॥
धीयवमअमावास्याअध्वामनिगायथा॥विगुकायेधिवदवत्सुदकेगु
नममुक्त॥ककमानत्यादि॥ ॥०॥मिककुसाकि॥ ॥१॥कल
याअधसिंहासननस्रमनेस्नानकृतीगसंरावना॥उंकरुजिनाकनी
संगगीगपदविरुपिगंपद्मासनसुववज्रत्सदवतमास्यहं॥कनाध्व
नपूर्यंतम॥कगांजलि॥उंजांजिसंधीमगुक्रयायनम॥धूपधीषलु

पक्षम नस्तानक्षममुधितेन शीषचुङ्कंकावस्तुनाय उन्नस्तान
 जाय ॥ जौकिं सखाहा ॥ नेवय समयथा वाभसद्यन मत हस्त अवल
 नातिमधि रगु प्रउका सुधमाभिका नम रुद्रनाकि ॥ अर्थमकु ॥ अ
 नकु सपरासाय सवलापिजायेन सनक्रयाय स्वामि को कृ गय ॥ १४
 गव नृय ॥ ॐ माने पश्चिमाहि मस्वाय रुद्रा शिंदेव नाय सफ अविप
 यत्पश्चिदेव नाय अंगं नवगनसहि नाय रुद्रमानत्यादि ॥ संप्रका
 किनने भाग्यउ व नृयाव नृने लेव किनिता नन गयहा ॥ साकिद

१८
 नाकु वानिर्गं सर्वेषामपि सर्वदा ॥ इवाम्भवाता मानधया ॥ अर्थ व सरु संलि
 ना उमायासहिता दवि रुद्रा देव नमो नृने ॥ रुद्रमान त्यादि ॥ ॥
 पनसता रुद्रमापन रुद्रा मयौने मि गुर्लि संकल्ययाय रुद्र गु २
 संकल्ययाहा संकल्यया दा नर्प यपता रुद्र रुद्रा देव संकल्यया पिग
 नेतयक नृय रुद्रा व उवाय सफ प्रका गुवप जा रुद्रमानया
 नसि कलैतिके रुद्रा सिपातय स्नानविय ॥ ॥ ॐ नित न ॥
 रुद्रान समाफ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ ॐ नित न ॥

ॐ नमो भगवते

एतन्माग्रीवजसत्वाय ॥ पर्ववक्त्राय नमो पीताम्बरकाचविज्जसितांगरे
 नागकेशसे वक्त्रमहापद्मनागवलितुधिरचिंक्रपताकाप्रतिपद्यां नमो
 वाविवाहपूजयत ॥ ॐ श्रीग्रीवः प्रयोगस्य विष्णुनामाय नमः ॥
 इत्युपास ॥ ॐ गंगनेत्राय नमः स्वाहा ॥ गनेपति ॥ ॐ सकंदाय नमः स्वाः
 हा ॥ ॐ महाकालाय नमः स्वाहा ॥ ॐ अंबुजलोकः प्रवतत्र श्रीधुं नमः स्वा
 हा ॥ आवाहन ॥ ॐ नमः स्वाहा ॥ मन्मथ ॥ ॐ नमः स्वाहा ॥
 स्त ॥ नमः ॥ ॐ श्रीनीलजिह्वादिशिवविष्णुमि ॥ बुद्धाय नमो पीताम्बरका

कमन्धनागमुखावेदमाताविमोनाकिनमामि हंतवादिनी ॥ ॥ वेद
 चक्रतत्रवक्त्र ॥ १ ॥ बुद्धाय नमः ॥ २ ॥ भूपतीषलुकमहाकंक
 मकपूत्राय नमः ॥ ३ ॥ वेतपयस्यसंगंधकंकनवक्त्रकासस्थानवक्त्राय
 नमः ॥ ४ ॥ सिताक्षि ॥ मभिनाभिमभि ॥ ५ ॥ ॐ श्रीनीलजिह्वकर्म
 कासंधानइक्ष्वावुहंतयकक्षिनिनपाकृज्जपयानवदइति ॥ ६ ॥
 वलिप्रतिगृह्णतनरपचरश्चरवाहिरुं ॥ ७ ॥ विष्णुनेत्रवक्त्राय नमः
 सिधमिगृह्णत ॥ ८ ॥ ॐ नमः स्वाहा ॥ ९ ॥ गुणमिधनविज्जकास्यनाचना

ॐ

नवग्रह स्तु

माधवजिथ ॥ १ ॥ २ आदि नया ॥ २ ॥ आदि लाय ॥ स्व मायः श्रुति प्रत्ये
 धिः दवतायः ॥ दमासनः पूष्यः प्रमासनः पद्मक २ प्रग र्कः समधि
 निः सफ स्व सफ मा भुक्तः दि उक्त सदा उविः ३ आदि लाय ध्या
 ने पूष्य नमः ॥ हा हिं स ॥ १ ॥ ३ स्व माय उ माय आ पूष्यः प्रत्ये
 धिः दवतायः ॥ द मां स न पूष्य नमः ॥ ३ स्व य न स य तां व
 व ध याः द सा स्व वि उष नः ग दा पा निः दि वा हू र क ठ वी व र
 दा स निः ३ स्व माय ध्या न पूष्य नमः ॥ १ ॥ सा स स्वा हा ॥ २ ॥ २ ॥ ३ ॥
 ग मायः सकं डायः ३ प्रिय र्थि धि दवतायः ॥ मां स पूष्य नमः

कां हिं स र्ग माय नमः ॥ ३ ॥ २ ॥ ३ ॥ पित मा स्यां व व ध यीः क र्क का
 वि स म द्यु तिः स्व कृ र मा ग दा पा निः सि रु था व र दा व धः वृ धाय
 ध्या ने पूष्य नमः ॥ कां हिं सः व धाय ध्या न पूष्य नमः ॥ ३ ॥ २ ॥ पित मा स्या
 व व ध यी नु त व र्क स म प्र रः वृ धा सा व र नि याः स्वा कृ स उ क
 मं द रः वृ रु स प ति य ध्या न पूष्य नमः ॥ हां हिं स स्वा हा ॥ ५ ॥ २ ॥ द व
 दे त्य उ र तिः त क र्क तिः स्व त व र उ र जीः दं दि नी व र दा क यी
 सा कृ स उ क म द रः स क्रा य ध्या न पूष्य नमः ॥ ३ ॥ कां हिं स स्वा हा ॥
 ४ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ नि व र स म द्यु तिः स वि व र ॥ ४ ॥ व ध वा र नः वा न

^मवा नास ^मशोधनी क र्क न्या को स त स स का स नि य वा य ध्वा न पृ ष्ठ
 नमः प्रो णिं स स्वा हा ॥ १ ॥ उ क या व व द्ध धी व द्ध ज य र्म ध र क
 र्नी नी र नी वं स न स्र य ग र ह य ध्वा न पृ ष्ठ न
 मः प्रो णिं स स्वा हा ॥ २ ॥ उ ध्वा मा धि वा रु व स र्धु गं दि ना ठ क ता न
 ना ध्वा मा स नै ग त नि नः क तु य स म हा व नी क तु य ध्वा न पृ ष्ठ
 नमः प्रो णिं स स्वा हा ॥ ३ ॥ उ र्ध्वा कि ना न नी र्नी ग यी ग प दः
 वि रु धि नी य मा स न स्र व र्ज ज स द र्नी न मा स र्दी ज ना यः
 ध्वा न पृ ष्ठ नमः प्रो णिं स स्वा हा ॥ ४ ॥ ध्वा ता च ना स्वा नै

^{अर्थ}
 य गु र्ज ॥ १ ॥ र क रि ग द स र वा यः ता ड व गु र्ज स फ मां
 जा ग्रा यः वि सा वा न कृ ता यः का स्य य र्म ता य कृ ति ता ग्रा य जा हि
 नि व र्क य पृ णि ति स्र वा य द्वा द स्वां गु र व र्ज ना क ता यः आ दि नै द
 व ता य अ धि द व र्ज स वा य पृ णि ति द व ता अ र्ध दि व र्ज ना प स
 वि र्नी वि ना द व र्ज ति कृ प र्ज दा स र्नी र्ज गं र्ज स दि ता य ॐ नै
 दि नै द व ता अ र्ध पृ णि ति स्वा हा ॥ २ ॥ वि र्ज स र्ज ता र वा य वे सा ष
 र्ज र्ज र्ज द र्ज जा ग्रा यः कृ ति का न कृ ता यः अ र्ज र्ज र्ज ता यः स्र त व
 र्ज यः वे स र्ज जा ग्रा यः अ र्ज र्ज ता यः द र्ज ना रि स्र वा यः सा मा धि द

सुभावादि विनायकः

[illegible]

यधननाकितायः० सानेउताहिमूडवायःवृधञ्चिंदवता
यविस्ववेवधविधिःविस्वदवताःतिवकुउपकुउम्यः० त्वं
तजगनसहितायः० मां० प्रपुति० स्वाहा॥ ४ ॥ ॥ सिधुदस
तवायश्चानु० उक्र० उकादस्याजागायः० उर्द्धागुनीनेऊगाय
० गस्वताजगवगायः० वा० प्रनेजागायः० पितवस्त्रियः० यत्राकिदि
उताहिमूडवायः० वृहस्पतिश्चिंदवतायः० वृहस्पतिश्चिंद
वतायः० वृहस्पतिश्चिंदवताः० वृहस्पतिश्चिंदवताः० वृहस्पतिश्चिंद
हितायः० मां० प्रपुति० स्वाहा॥ ५ ॥ ॥ उ० गवदस्वतवायः०

हं सुकनम्यां जा ग्रायः पूष्य न ऊ ग्रायः ला व व ग्राय वा क्र न जा ग्रायः ३
क वे म्हायः व उ क सां क ता य पूर्व पू न्या हि म्हायः सु क अ धि द व ता स
का य पु त्वं धि द व त्वं जा य व सि ह्म वि धि ३ क द व ता ति ह्म य ऊ न्द स
त्र त्वं न व गे न स हि ता यः सां अ पु पु ति ह्म स्वा हा ॥ ५ ॥ ॥ २ ॥ उं स्व मा ऊ द
स व वायः मा य ३ क अ सु मां जा ग्राय जी दि नि न ऊ ग्रायः का स व म्हा
ग्रायः सु ध जा ग्रायः नी व व म्हा य दि र्ग क ता य य मि म द चि ता ति
म्हायः स नि च न अ धि द व ता य ऊ मा यः पु त्वं धि द व ता य पु ऊ
प ति स धिः स नि च न द व ता ग्रा य ति ह्म उ स त्र त्वं न व गे न स हिः

ता यः नू मा अ पु पु ति ह्म स्वा हा ॥ ७ ॥ ॥ उं म न य द स व वायः मा ३
न सु क पू र्मा मां जा ग्राय र्ग नि न ऊ ग्रा य पा धि न ग्रा य सु ड जा ग्रा
यः क र्ग व र्ग य के म मा कि ता य नै स त्व य मि मा हि म्हाय य न ह्म
धि द व ताः का मा य त्व धि द व ता य स र्ग य वा म द व वि धि न उ
द व ता ग्रा य ति ह्म उ स त्र त्वं न व गे न स हि ता यः सां अ पु पु ति ह्म
स्वा हा ॥ ८ ॥ ग्रा य वि तां त व वायः आ व न क र्ग अ मा वा सां जा ग्रा
यः अ स व म्हा न ऊ ग्रा यः ऊ म नि ग्रा य सु ड जा ग्रा य धू म व म्हा य
व आ क ता यः वा य य चि मा हि म्हायः क उ व अ धि द व ता य

विह्वलमयप्रत्यं धिदवताय बुद्धने बुद्धा विविध कनददता
गमयति न उच्यते तं न मसहिताय न मां न पुपुति न सा
॥ २॥ न जलमपुतो सायः स्वयं गायिका यतः स्वन ऊगायः स्वमि
काकिताय स्वयनवर्हयः सानेयाम्भुमाति म्दवायः ऊमेध
धिदवतायः सक विविध प्रत्यं धिदवताय न त्वन न गनम
हिताय ऊऊन स्याय वृधियत्रिपुर्ह्यर्थः न मां न पुपुति न सा
हो ॥ १० ॥ धृति न पुयाय न ॥ ० ॥ किं वति ॥ ॥

नतसि कु पृथ्वी संकास न का स्य न समप्रहंः लोक गाथ
मगदीयं कलिमंडलं कलिगजात विमोषा सफमिर
कास्ययस्य धिदवतं ऊतिजातं नमस्तुतः ॥ १ ॥ लीनसंधी
मगमलारं कस्तु पृथ्वी निधिया ससां कलाहिनीत उमिदा
किप्रयत्नः सोमवृक्षं उदसां कलि काव्यमयति गोत्रियव
वर्तुतं नैव स्यात्ताति नमस्तुतः ॥ २ ॥ धृजनी गहं संकृतं वंधुजी
वसमप्रहं सोमिददा उमीति न कुमाला गन कस्तु ॥ पूर्वाधोसा

दम्पा ऊन कंस नीह न युति सान द्वा ऊ क सं दे के श्री ग न स त तं न म
॥ ३ ॥ आहि नि ग ई स उ तं क ई का व द ल प्र रं : स्वे म प उ म हाने ज
कु र्वे मा नि प्र य च उ ध नि ष्टा द्वा द सि ज त म य द म म म र व ना ना
य न नि द व स वे स ज्ञा ति न मी स त ॥ ४ ॥ सि व लि क नि का का च
सु ता ग म यः प्र ष्ट वि उ द व म प्रि म हाने ज्ञा गु नो मा नि प्र य च उ सि ध
म म उ तं रा गु नि म क सं र वं गु न व व स द व न ल न मी स त ॥ ५ ॥
का मं स्य इ म का सं गु क व र वि उ वि तं मा नि द द उ वी नि ल दं य
व क्ता सः रा याः पू ष्य रा म य ते दं न व म्मा रा ग व स्य च उ क स

का धि दे व लं वि प्र ज्ञा ति न मी स तः ॥ ७ ॥ नी मा य लं द म न
ऊ न नि पि त वा म नि च ल ग हः य सा म दा सा नि प्र य च उ श्री हि
प्रि या मी ज्ञा तं श्री मा स कं य पी त व य तः ऊ मा सि गु मे लि दं ग व म
द ज्ञा ति न मी स त ॥ ८ ॥ अ त सि कू प ष्य सं का से नी मा ऊ न स मी
प्रि या मा नि द द उ वी नि तं ना रु च म क द्वा कू म द नः पा पि न
ग व ग तं सु नि प र्त मा म्मा स सै त ना रु का ना धि दे व लं स द ज्ञा ति
न मी स त ॥ ९ ॥ सि इ न नू वि ला का ल न क व र्त्त नि ल पि वा र्क उ
वे न क नै ता ग स दा सा नि प्र य च उ श्री प र व तं श्री मा वा स्या ई

सुखा मूनि गुणयोगी विप्र गुण शिखर सं गुड व
नमी रुते ॥ १॥ वंरु व्या वंरु नम व किं किता
नमग्र हा भाकि दय उठा नि नं सर्व बां मयि स
दा सुत धुता वल ध बा सुत वृष रु सं लिता उ मा य
सहिता दे वि रु न द वं नमी रुते ॥ १० ॥